प्रातः क्लास ओम 25/10/66

रिकॉर्डः– बचपन के दिन... ओम् शांति। मीठे–2 रूहानी बच्चों ने गीत के दो अक्षर सुने। यह तो निश्चय करते हो बेहद का बाप अब बेहद सुख का वर्सा दे रहे हैं। ऐसे बाप के हम आए बच्चे बने हैं। तो बाप की श्रीमत पर भी चलना है। नहीं तो क्या होगा? अब (हँस)ते हैं, कहते हो हम महाराजा–महारानी बनेंगे। अगर हाथ छोड़ दिया तो फिर जाकर साधारण प्रजा बनेंगे। स्वर्ग में तो ज़रूर आवेंगे। ऐसे भी नहीं सब स्वर्ग में आने वाले हैं। जो सतयुग–त्रेता में आने वाले होंगे वो ही आवेंगे। सतयुग–त्रेता दोनों को मिलाकर स्वर्ग कहा जाता है। फिर जो पहले–2 नई दुनिया में आते हैं वो अच्छा सुख पाते हैं। बाकी जो बाद में आने वाले हैं वो कोई ज्ञान नहीं आकर लेंगे। ज्ञान लेने वाले सतयुग–त्रेता में आवेंगे। बाकी आते ही है रावण राज्य में। वो थोड़ा सुख पा सकेंगे। सतयुग–त्रेता में तो बहुत सुख है ना। इसलिए पुरुषार्थ करके बाप से बेहद का, सदा सुख का वर्सा पाना चाहिए और यह महान खुशखबरी सबको सुनानी चाहिए। अब देहली में प्रदर्शनी भी होनी है। तो बच्चों को डायरैक्शन मिलते हैं खुशखबरी लिखो। कार्ड्स जो छपवाते हैं उसमें भी यह लिखना चाहिए– ऊँच ते ऊँच, बेहद के बाप ही(की) खुशखबरी। प्रदर्शनी में तुम दिखाते हो नई दुनिया कैसे स्थापन होती है। तो यह क्लीयर और पूरे अक्षरों में लिखना चाहिए– बेहद का बाप, ज्ञान का सागर, पतित–पावन, सद्गति दाता, गीता का भगवान शिव कैसे ब्रह्माकुमार–कुमारियों द्वारा फिर से कलियुग, सम्पूर्ण विकारी, भ्रष्टाचारी, पतित दुनिया को सतयुगी, सम्पूर्ण निर्विकारी, पावन, श्रेष्ठाचारी दुनिया बना रहे हैं, वो खुशखबरी आकर सुनो अथवा समझो। गवर्मेन्ट से भी तुम्हारी यह प्रतिज्ञा है– 10 वर्ष में हम भारत को फिर से सतयुगी, श्रेष्टाचारी, 100% पवित्रता–सुख–शांति का दैवी स्वराज्य कैसे स्थापन कर रहे हैं और इस विकारी दुनिया का विनाश कैसे होगा वो आकर समझो। ऐसे क्लीयर लिखना चाहिए। कार्ड में ही ऐसे लिखो। बाबा जो डायरैक्शन देते हैं वो एक्युरेट लिखना चाहिए जो मनुष्य अच्छी रीत समझ सके। यह प्रजापिता ब्रह्माकुमारियाँ और कुमार कल्प ..... मिसल ड्रामा प्लैनुसार। परमपिता परमात्मा शिव की श्रीमत पर सहज राजयोग और पवित्रता के बल से अपने तन–मन–धन से भारत को ऐसा श्रेष्टाचारी, पावन कैसे बना रहे हैं सो आकर समझो। ऐसे क्लीयर करके कार्ड में लिखना चाहिए जो कोई भी समझ जाए, यह ब्रह्माकुमारियाँ शिवबाबा की मत पर राम राज्य स्थापन कर रही है जो गाँधी जी (की) भी चाहना थी। देहली की ओपनिंग भी जज द्वारा करा रहे हैं। अख़बार में भी ऐसे फुल निमंत्रण पड़ जाए। यह आकर समझो। यह ज़रूर समझाना है कि ब्रह्माकुमार–कुमारियाँ अपने तन–मन–धन से यह कर रही है। तो मनुष्य कब ऐसा ना समझे कि यह कोई भीख वा डोनेशन आदि माँगती है। दुनिया में तो सब डोनेशन पर ही चलते हैं। यहाँ तुम कहती हो ब्रह्माकुमारियाँ अपन तन–मन–धन से कर रही है। वो खुद ही स्वराज्य लेती है तो ज़रूर अपना ही खर्चा करेगी। जो मेहनत करते हैं उनको ही 21 जन्म लिए वर्सा मिलता है। भारतवासी ही 21 जन्म श्रेष्टाचारी, डबल सिरताज बनते हैं। यह (लक्ष्मी–नारायण) डबल सिरताज हैं ना। अब तो कोई ताज ना रहा है। यह तो अच्छी रीत समझाना पड़े। कार्ड्स में टूमच लिखत भी ना हो सकत...। बाप समझाते हैं ऐसे–2 लिखो तो बिचारों को मालूम पड़े ब्रह्माकुमारियाँ क्या कर रही है। बड़ों का आवाज़ होगा तो फिर गरीब का भी सुनेंगे। नहीं तो गरीब की कोई बात नहीं सुनते। साहुकार का आवाज़ झट होता है। तुम सिद्ध कर बताती हो, हम खास भारत को स्वर्ग बनाते हैं। बाकी सबको शांतिधाम भेज देते हैं। समझाना भी ऐसे हैं, भारत 5000 वर्ष पहले ऐसा था। अब तो कलियुग है। वो सतयुग था। अब बताओ, सतयुग में कितने आदमी थे? अब कलियुग का अंत है। यह वो ही महाभारत लड़ाई है। और कोई समय तो ऐसी लड़ाई लगी नहीं है। यह भी .... वार पिछाड़ी में हुई है। ट्रायल करते हैं ना। एक बार, दो बार मानता हूँ। तीसरा बार किया तो माफी नहीं मिलेगी। तो लड़ाइयाँ भी दो हो चुकी हैं। इनको तीसरी लड़ाई कहा जाता है। अब तो ऐटॉमिक बॉम्बस आदि बनाते रहते हैं। किसकी भी सुनते नहीं हैं। वो कहते हैं जो बॉम्बस बना है वो सब समुद्र में डाल दो तो हम भी नहीं बनावेंगे। तुम रखो और हम ना बनावे, यह कैसे हो

(अधूरी मुरली)